Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 17 अंक 02 28 फरवरी 2017 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जीवन का अधिकार-मानवाधिकार

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं से हम भली-भांति परिचित हैं। बाल काल में उन्होने समाज को भय मुक्त किया तथा विश्व को सर्व श्रेष्ठ गीता का ज्ञान दिया जिसमें 'कर्म' की महता के साथ-साथ मानवाधिकार का बहुत बड़ा संदेश दिया। मुगल काल में हिंदूओं पर बहुत जुल्म हुए, जिसका परिणाम छिपा नहीं है। सिक्ख धर्म अस्तित्व में आया, गुरू गोविंद सिंह जी ने कहा है - ''सुरा सो पहचानवो, जो लरे दीन की हेत, पुर्जा-पुर्जा कट मरे, कबहू न हारे खेत अर्थात बलवान वही है जो अक्षम के साथ खड़ा हो उसके हितों की रक्षा के लिए लड़े और लड़ाई में कभी मैदान ना छोड़े। यह मानवाधिकारों की रक्षा हेतू बहुत बड़ा कदम था। उन्होने आतताईयों से लोहा लेते हुए अपना सर्वस्व लुटा दिया लेकिन समाज को एक नई दशा-दिशा दे गए। आधुनिक परिपेक्ष में मानवाधिकार किसी व्यक्ति विशेष या राजकीय प्रशासनिक प्रताड़ना तथा राजनीतिज्ञों, प्रशासनिक अधिकारियों, अर्थशास्त्रों और सामाजिक ठेकेदारों द्वारा विशेषाधिकार उपयुक्त कर खुद को लाभ पहुंचाना भी मानवाधिकार हनन की श्रेणी में आता है। यहा मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की भूमिका समाज को समाजो-आर्थिक तथा अपराधों से मुक्ति एवं भयमुक्त सुरक्षा प्रदान करने हेतू आती है।

सर्वप्रथम हमें यह जानना जरूरी है कि 'कैदी' कौन है- यह किसी न्यायालय द्वारा सुनाई गई सजा है जिसके पुलिस या न्यायिक हिरासत में रखते हुए उसकी जीवन शैली में स्वच्छंदता से महरूम करने की प्रक्रिया है ताकि उस समय में वह समाज को और आतंकित ना कर सके।

भारतीय संविधान अनुसार हर व्यक्ति अभिव्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक नित्य कर्मो को लोकतांत्रिक मर्यादाओं में रहते हुए व्यतीत कर सकता है जिससे दूसरे व्यक्ति धर्म तथा समाज की भावनाएं आहत ना हों और किसी के मानवाधिकारों का हनन ना हो। यहां हर किसी को समानता का अधिकार है तथा हनन करने वाले के लिए सजा का प्रावधान है। हर छोटी से छोटी घटना दुर्घटना का अध्ययन बहुत बारीकी से किया गया है। विडंबना है कि जेल में कैदी मां के पेट से पैदा होने वाले बच्चे के अधिकारों की रक्षा हेतू कोई प्रावधान नहीं है ताकि उसकी भलाई तथा जीवन यापन हेतू कैरियर विकास की ओर कदम उठाए जा सकें। ऐसे विद्वानों से एक भारी चूक मनन का विषय है। हालांकि बोस्टल जेल में शिक्षा तथा वोकेशनल ट्रैनिंग का प्रावधान है। बाल अपराधियों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास हेतू कुछ महत्वपूर्ण पग उठाए भी गए हैं जैसे कि बाल अपराधियों के निवास में पुलिस अधिकारी हथियार इत्यादि लेकर ना जाएं तथा उनमें आत्म सम्मान की भावना जागृत करें, उसकी शिक्षा, बीमारी, चोट तथा मृत्यु से उसके अभिभावकों को अवगत रखें। इस प्रक्रिया में न्यायालयों की संविधानिक भूमिका है तथा राष्ट्र सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सभी उच्च न्यायालयों को ऐसे मामलों में मानवाधिकार हनन के मामलों पर पैनी दृष्टि रखने की सख्त हिदायत हैं।

मानवाधिकार सरंक्षण हेतू पारिवारिक संरचना के साथ गांव में पंचायत, सामाजिक भाईचारा, थाना प्रशासनिक स्तर पर तहसील, जिला राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार आयोग तथा संस्था विद्यमान है। यहां तक कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर (यू एन ओ) में भी एक शाखा है जो कमजोर देशों के हितों की रक्षा करती है ताकि सामर्थ देश धौंस पट्टी ना दिखा सकें। हालांकि वास्तविकता में यहां कुछ देशों का बर्चस्व है जो अपने हितों को साधने हेतू ऐसे कृत्य कर भी देते हैं लेकिन उन्हे भी एक मर्यादा में बंधे रहना पड़ता है। कोई अतिश्योक्ति नहीं है क्योंकि तुलसी रामयण तक में वर्णित है - 'सामर्थ को ना दोष गुसांई' अर्थात बलवान को कोई दोष नहीं क्योंकि निर्बल उसके विरूद्ध आवाज नहीं उठा सकता और वह अपनी स्वच्छंदता से कुछेक लाभ उठा भी लेते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक मान्यताओं का सर्वोपरि होने के बावजूद राजनीति में अपराधिक प्रवृति वाले लोगों की अह्म भूमिका है।

आम जीवन में भी ऐसे लोग मतदाताओं को डरा धमका कर और साम-दाम-दंडभेद नीति से मत हासिल कर लेते हैं और राजनैतिक सत्ता आने पर प्रशासनिक अधिकारियों और पुलिस अधिकारियों तक को प्रताड़ित कर लेते हैं लेकिन फिर भी मानवाधिकार संस्थाओं के दखल से वे अंधेरगर्दी नहीं कर पाते और आटे में नमक तक ही सीमित रह जाते हैं। हालांकि कैदियों के

शेष पेज-2 पर

शेष पेज–1

मानवाधिकारों की भी सुरक्षा की व्यवस्था है ताकि उनके साथ क्रुरता न हो तथा अमानवीय व्यवहार ना हो फिर भी कभी-कभी ऐसे किस्से उजागर हो जाते हैं। इसके विपरीत अक्सर घोर अपराधी मानवाधिकारों के प्रावधान तथा न्यायिक जटिलताओं का लाभ उठाकर छूट भी जाते हैं क्योंकि वे उचित तथा शीघ्र न्यायिक प्रक्रिया के साथ-साथ दंबगता से आजाद होने में सफलता हासिल कर लेते हैं। यहां तक कि आमजन आर्थिक कमजोरी, अज्ञानता इत्यादि की वजह से जीवन प्रयंत कानूनी जटिलताओं में उलझे रहते हैं या उनके केस न्यायालयों में लंबित पड़े रहते हैं।

गवाह की सुरक्षा की भी व्यवस्था है लेकिन उसकी सामाजिक तथा पारिवारिक सुरक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। अक्सर फिल्मों में दिखाया जाता है कि अपराधी गवाह के पारिवारिक सदस्यों का अपहरण तक करके मानमाफिक गवाही दिलवा लेते हैं या लंबे समय तक न्यायालयों में केस चलते उलझन से बचने हेतू मुकर जाते हैं। अब मानवाधिकार संस्थाओं के दखल से ऐसा करने पर प्रतिबंध आयत करवाया है लेकिन इसकी प्राथमिकता इसकी प्रमाणिक नहीं है। कानून में व्यवस्थाएं तथा धाराएं अनेक हैं लेकिन उनकी जटिलताएं और आत्म विरोध की धाआरों का हवाला देकर कई बार अपराधी छुटकारा पा जाते हैं। जैसा कि पुलिस किसी कैदी की निजता में दखल अंदाजी नहीं कर सकती। उसे जमानत पर छूटने का अधिकार है। हिरासत के 24 घंटे के अंदर-अंदर न्यायालय को बताना जरूरी है। यू एन जनरल एसेंबली ने भी कुछेक प्रावधान पारित किए हैं जिनमें न्यायधीश भी एक सीमा तक ही दखल दे सकता है जो अपराधी अपना हित साधने में इस्तेमाल कर लेता है।

अपराधी को कठोर दंड या सालट्री कन्फाइनमैंट बहुत विशेष हालातों में बहुत सोच समझ के बाद ही देने के निर्देश हैं। अपराधी को हथकड़ी ना लगाने के आदेश हैं बर्शते अपराधी कुख्यात या खूंखर ना हो क्योंकि ऐसे में वह खुद को या पुलिस अधिकारियों को नुकसान पहुंचा सकता है। उसके बावजूद हमारा मीडिया भी कभी कभार नेगेटिव भूमिका निभा जाता है। मुझे स्मरण है कि रोहतक में एक व्यक्ति अपने सारे सुसराल परिवार की हत्या कर फरार हो गया। पुलिस की मुस्तैदी से 24 घंटे में ही उसे पकड़ लिया गया और पुलिस अधिकारियों के पास उसे काबू कर थाने तक लान कोई उचित व्यवस्था के अभाव में उसे पैदल ही थाने तक लाने में उचित समझा। मीडिया के एक सैक्शन ने अपराधी को महमा मंडित करते हुए यह समाचार प्रकाशित कर दिया। हालांकि दूसरे दिन ही सामाजिक बहिष्कार तथा पुलिस सराहना इत्यादि में उठी आवाज के मद्देनजर उन्हे क्षमा याचना भी करनी पड़ी लेकिन एक बार सभी सकते में आ गए।

मानवाधिकार हनन करने वाले विशेषतया आतंकवादी और असामाजिक गतिविधियों में संलिप्त व्यक्ति कानून की जिन धाराओं का उलंघन करता है अक्सर पकड़ जाने की स्थिति में उन्ही धाराओं का उल्लेख कर अपने मानवाधिकारों की सुरक्षा की गुहार करता है। कैदी को अपने वकील से मिलने का अधिकार है जो एक अच्छी परंपरा है लेकिन वकील अपने मुव्वकील के लिए कानूनी स्थिलताओं और जटिलताओं का सहारा लेकर अपराधी को छुड़वाने में कामयाब हो जाते हैं और वे आजाद हाते ही सभी साक्ष्यों को नष्ट कर देने में सफल हो जाते हैं। कानूनी व्यवस्था है कि सर्च में कानूनी प्रक्रियाओं का ध्यान रखा जाऐ, अक्सर असामाजिक लोग इसी का लाभ उठाकर साक्ष्य समाप्त कर लेते हैं। आमजन के मानवाधिकारों की रक्षा हेतू महत्वपूर्ण व्यवस्था ही उल्टी हो जाती है लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि ऐसे प्रावधान ही खत्म कर दिए जायें क्योंकि समाज अक्सर ऐसे प्रावधानों, प्रक्रियाओं और मान्यताओं पर टिका है। हरेक को पता है कि माचिस से जलाई गई अग्नि खाना बनाने के काम आती है अगर यही माचिस किसी का घर जलाने में इस्तेमाल हो तो इसे प्रतिबंधित तो नहीं किया जा सकता।

ट्रायल से पूर्व तथाकथित अपराधी को मानवीय व्यवहार, आराम तथा मैडीकल तक की धाराएं मौजूद हैं ताकि वे आत्म सम्मान से खुद को निर्दोष साबित कर सकें। उचित तथा जल्द न्यायिक प्रक्रिया हेतू न्यायिक व्यवस्थाएं हैं। वहीं सर्वोच्च न्यायालय पुलिस कस्टडी में क्रुरता की ओर अ1सर कई बार इंगित कर चुकी हैं, इसके बावजूद इससे बड़ी कायरता की परकाष्ठा क्या होगी कि पुलिस कस्टडी में अक्सर क्रुरता तथा मानसिक घाव दे दिए जाते हैं जो सरासर मानवाधिकारों के हनन की परिधी में आते हैं। कई बार इन्ही यातनाओं के भय से लोग छिप जाते हैं। कानून की नजर में वे एक अन्य अपराध करते हैं लेकिन अ1सर उनका डर सत्य साबित हो जाता है। ऐसे उदाहरण हैं ''उत्तर प्रदेश में गरीब माधोराम बनाम उत्तरप्रदेश एफ आई आर 1978 एस सी 1594'' के अनुसार अगर कोई रिस्क ना हो तो व्यक्ति को व्यक्तिगत मुचलके पर छोड़ा जा सकता है जैसा कि हसैनआरा खातून बनाम बिहार एफ आईआर 1979 एस सी 1360 के 1363-1364 के अंतर्गत तथाकथित 90 दिन तक पुलिस हिरासत के बाद ही मैजीस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। दंडाधिकारी उसकी न्यायिक कस्टडी को और बढा भी सकता है तथा

एनटीसीपेटरी बेल का सी आर पी सी की धारा 438 में प्रावधान है।

हिरासत में मानवाधिकारों की रक्षा हेतू कानूनी सहायता तथा पुलिस द्वारा ढाए गए सितम के विरूद्ध क्षतिपूर्ति तक का प्रावधान है। कैदी को कम से कम उजरत हासिल करने की भी व्यवस्था है। फांसी की सजा केवल रेयर केसों में ही देने की प्रक्रिया है। कई देशों में तो इसे प्रतिबंधित भी कर दिया है। कई ऐक केसों में फांसी की सजा होने के बावजूद या उम्र कैद होने की अवधि में न्यायिक प्रक्रिया की देरी में लंबा समय कट जाए तो उसे दोहरी सजा ना हो, को भी ध्यान में रखा गया है।

महिला कैदियों को हिरासत में कुछेक विशेष अधिकार हासिल हैं जैसे कि उसकी तलाशी केवल महिला की उपस्थिति में हों, उनको पुरूष कैदियों से अलग रखा जाए। कैद में बच्चे के जन्म होने के हालात में उसके जन्म प्रमाण पत्र में इसे इंद्राज ना किया जाए। अपने धर्म को मानते हुए पूजा अर्चना आदि का अधिकार, महिला कैदियों के अपने या आश्रित बच्चों की बीमारी की वजह से व्यक्तिगत मुचलके पर छोड़ने की धारा विद्यमान है। हिरासत में दूध पीते बच्चों की मां के साथ रहने की भी व्यवस्था है। मानवाधिकारों की सुरक्षा केवल थाना तक महदूद नहीं है बल्कि आत्म सम्मान बनाए रखने में कहीं भी कभी भी हर जगह अनिवार्य है ताकि वे स्वस्थ वातारण में जीवन यापन कर सकें। जेल में रहते मां के साथ बच्चों के कैरियर के विकास हेतू सरकार को उचित पग उठाने होगें अन्यथा वे सोचने और कहने पर मजबूर होगे, मेरे शहर का एक छोटा सा बच्चा देखकर हम बड़ों की दुनिया बड़ा होने से डरता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

HORROR AND ATROCITIES DURING 2ND WORLD WAR

- R.N. Malik

(One unfailing observation of World History is that there always occur freak events in all walks of life e.g. a calf born with two heads or a cloud burst in Rajasthan etc. Two successive great (world) wars within a span of just 20yrs is also a freak historical event.)

The Second World War (1939-45) is the most catastrophic, ferocious and costliest event in human history. It consumed 6 crore people (2 crore soldiers and 4 crore civilians) and ruined the economy of almost all the developed countries. Villages were burnt and cities were razed to the ground in huge dumps of debris. First World War had consumed 1.5 crore people. Russia topped the list with the deaths of 87lakh soldiers and 170 lakh civilians. Germany lost 33 lakh soldiers and 20 lakh civilians.China (both communist and nationalist groups) lost 35 lakh soldiers and 1` crore civilians. India lost 48000 soldiers. They fought for the sake of England without trading off their own independence. Civilians included people of all ages including small children. Hitler had developed pathological hatred for Jews and had made up his mind to make the world free of them. Finally he could exterminate 6 million.

Books on Second World War devote more on the victories and defeats during the war than on atrocities committed on prisoners and civilians. This article does the reverse. This war showed how humans can be worst in-humans. Cultural Revolution under Mao in China or Bolshevik revolution under Stalin in Russia or plague epidemics in 1540 and 1905 killed more people than the Second World War. But what keeps Second World War separate from other devastating events are the atrocities, brutalities, manner of killings of innocent people besides the destruction of villages, cities, universities, intellectuals, institutions, literature and infrastructure.

There are two big surprises in this entire holocaust. How come, merely four tyrants(Hitler, Mussolini, Stalin, and General TojoHiddiki) could throw whole world into a destructive war and create a naked dance of death and destruction at the global scale for six long years. Strangely there were no sane voices in this world at that time. Diplomacy did not do its job and Mahatma Gandhi was ridiculed for making an appeal for peace. Secondly how these nations could re- build themselves so quickly from the ruins. On the other hand India, could not rebuild itself even 70 years after independence.

Poland was the hardest hit. She was attacked twice. First in 1939 and again when Russia reoccupied by defeating Germany in July, 1944. Both Stalin and Hitler were competing with each other in decimating the entire generation of this unfortunate country. Japan bore the brunt of two atom bombs. But explosion of incendiary bombs on her cities killed more people and burnt more houses than the two atom bombs on Hiroshima and Nagasaki on August 6 and 9, 1945 respectively. Hamburg and Dresden in Germany and Manila in Philippine met almost similar fates. Now these very countries have become super powers in all respects. Atrocities on civilian population of occupied territories were more hair raising than deaths during the battles. The first job of Russian, Japanese and German soldiers after the victories used to be to rape the young girls and women and then kill them. Many of the survivors committed suicides as they could not bear the trauma. Many parents shot down their children before committing suicides.

Thank God! all countries (except China and Russia) forgot all the atrocities and did not carry the baggage of animosity any further. The best gift of the world war was the end of colonialism and the worst gift was the birth of cold war and spread of communism. Post war events also reflect the height of ingratitude on the part of Russia and China. Russia was saved from German defeat simply because of massive material and financial aid given by US. Now USSR considers US as its worst enemy. US soldiers fought against Japan on behalf of China and avenged the defeat and atrocities suffered by China at the hands of Japan. Russia (even with no war-pact with Japan) attacked Japan in Manchuria when she had surrendered before US in August 1945. Looking at the events during the war and after (Korea, Vietnam, Israel and now Syria) one is inclined to believe that world is a mad house of genetically defective people and that two super powers will never let this world live in peace.

Seeds of Second World War were sown in the Treaty of Versailles in 1919 when Allies imposed very harsh conditions on defeated Germany. David Lloyd, then PM England cautioned the French PM Clemenceau against this unreasonability but the later ignored the warning. Failure of League of Nations and total aloofness of US, stubbornness of Churchill and failure of Diplomacy were the other factors failing to avoid the war. After conquering Poland, Hitler sincerely wanted to have peace with England because he thought that Britishers were also part of Aryan race. But all his offers were spurned both by Chamberlain and Churchill.

Hitler wanted to rebuild the defeated Germany as Germany the great, to play a stellar role in world affairs. He was convinced that he could not fulfill his dream without annexing more territories rich in minerals, agriculture and oil. So he wanted to reach upto Egypt. Mussolini and Japan also thought like wise. Japan is the only big country that is totally deprived of natural resources. Stalin wanted Poland and Finland under its umbrella and spread communism in Balkan countries so that these could act as buffer states if Germany attacked Russia. These expansionist ambitions of four heads of states pushed the whole world into a burning inferno for 6 long years. Ultra nationalism of Japanese (both soldiers and civilians) is also unprecedented. That is why very few units surrendered in the Pacific War and most of the prisoners committed suicides later on. In Kohima, they fought even when they did not get food for the last few weeks. Had they surrendered in July 1945, Japan would not have been bombed at all. But when the Emperor announced the unconditional surrender, entire Japanese population was in tears.

Summary of War

Pre - war battles started in 1931 when Japan attacked China and captured Manchuria. Hitler was a late entry. Italy attacked Somalia in 1935. Japan launched a full-scale war in 1937 against China.Russia defeated Japan at Golkhanaln in March 1939. Hitler annexed Austria in 1938. Czechoslovakia was annexed in March 1939. Hitler also sent military in Spain to help Franko to suppress the rebellion. Full scale war started on 1st September 1939 when Germany attacked Poland at 4:45 am. England and France declared war against Germany two days after. Russia also attacked Poland from eastern end on 17thSeptember. Thus, Poland was between frying pan and fire and had to surrender on 29th September. It was divided 50-50 between the two tigers. There were six theaters in the six years long war.

1) Germany vs western Europe.
2) Germany vs Russia.
3) Germany vs England in northern Africa.
4) Germany vs Balkans.
5) Japan vs South East Asia.
6) USA vs Japan.

Attack on Poland

Hitler adopted a new strategy of fighting war and it was called Blitzcreig i.e. massive attack by infantry, artillery at lightening speed with the aid of heavy air attack of bombers. Other countries also followed the same strategy later on to repulse the attacks. Poland was a small country. Still the Blitzcreig consisted of 3 million soldiers, 4 lakh horses, 3700 tanks etc. A sortie of 1000 planes attacked Poland airfields. England and France gave false sense of security to Polish govt and advised to ignore the war threats of Hitler. Accordingly, army was not mobilized in advance and Poland was caught by surprise. Russia attacked Poland from the other end on 17th September. Poland was helpless to fight against two powerful countries at the same time and surrendered on 29th September. German losses were 40,000 killed or missing. Poles - 2 lakh killed or missing. Soviets - 3000 killed or missing. 7 lakhs soldiers were taken as prisoners of war. Most were starved to death or given menial jobs or massacred or sent to Siberia. No pity was shown to civilians. 4 lakhs Jews were sent to concentration camps and exterminated. Polish intellectuals like judges, aristocrats, professors etc. were also shot dead. Stalin wanted to decimate Poland completely.

Attack on Finland

Russia wanted to have control over the Gulf near Leningrad which Finland refused. Then Russia attacked Finland on 19th November in freezing cold with an army of 7 lakh soldiers. Finland had an army of 1.5 lakh. Finns fought bravely but had to surrender in March and agree to harsh conditions of Stalin. Russian causalities were 87,000 killed or missing. Most died due to frost bite as many soldiers were given only summer uniforms.

Germany vs Europe (First theater of War)

Hitler wanted Denmark and Norway under his control so that he could match British Naval attack from North Sea. England wanted to defend Norway because all the iron-ore from Sweden to Germany passed through the ports of Norway. So, Germany attacked Norway on 2nd April, 1940 and landed large number of paratroopers on all the ports of Norway. Then Germany also sent soldiers with the help of ships. Air attacks were conducted simultaneously. Denmark decided not to fight and surrender within 24hrs. Norway took one month to surrender. British and French battle ships could not cut much

ice. Churchill had to eat the humble pie for this fiasco. Allied losses were 4000 against Germany's 5300.

Attack on France, Holland and Belgium

England was prepared for war but not France. France PM was blaming Poland for not giving Denzing port to Hitler. French soldiers were saying two things, "Why we should die for Poland and England pushing us into war." England and France setup a safety line of British Expeditionary Force (BEF) between Denkirk and Magnot Line. Hitler made three pincer attacks on 10th May, 1940. One pincer group passed through Holland (along with paratroopers); another pierced through Belgium and the third through the forests of Ardinnens. Holland surrendered within five days after bombing of Rotterdam. Civilians in all urban areas started running towards villages and made beelines along the main roads and created problem for BEF. German army was led by large number of tanks under Romell. He was nearing Dunkirk where Gen. Gort was retreating and asked Churchill for evacuation of soldiers. Hitler made the mistake of asking Romell to stop to enable infantry units to catchup. In the meantime, Churchill sent all the ships and boats of England to evacuate 3 lakhs soldiers to safety. But for this mistake of Hitler Romell would have captured all the 3 lakh soldiers and war might have been ended there and then. This was on 29th May.

Hitler now directed his Panzer groups to move towards south and the campaign ended without much fight on 16th June. France was now under German occupation. Part of it was given to Gen. Petain. It was called Vichy France. All Allied losses were 1 lakh soldiers against Germany's 45000. 22 lakh soldiers of France, England, Belgium and Holland were taken prisoners. Jews were searched and exterminated. But other prisoners were not treated as harshly as Poles because of two reasons i.e. lackof racial prejudices and need to use them in the war against Communists. Hitler hated Communist as much as he hated Jews. So, these prisoners were employed in factories as daily wagers. England also lost 944 aircrafts and 350 fighter pilots. And Germany lost 1445 aircrafts and 725 pilots.

Attack on England

Hitler now wanted cross-channel operation against England. But Harmann Goring, Commander Luftwaffe (German Airforce) told Hitler that Luftwaffe would be able to destroy RAF (British Airforce) in 4 days. Hitler agreed. Germany had already setup its bases in France and Belgium. England did not want to bomb these countries and Germany was proving out of range. That was the advantage for Germany. But England had the advantage of Radar. British Pilots were also smarter. So, the thrust of RAF was on mid-air interception and shooting from ground. German bombing lasted from September, 1940 to May, 1941. 40,000 Britishers lost their lives. Loss to industry was tremendous. 2lakh buildings were destroyed. But speeches of Churchill kept the morale of British people at a very high level.

Campaign in Africa and Middle East

Mussolini was keen to have control in Mediterranean and North Africa. He had already big presence in Somalia and Libya. British forces in Egypt were only 63,000 troops. Italy had 2.5 lakh in Libya and 3.0 lakh in Somalia. England had only 10,000 in Sudan. But Italians were very poor fighters. General Wavell was the Commander (later Viceroy of India) of British forces and attacked Italian forces in December, 1940. Air attack destroyed 6 battleships of Italy. British forces repulsed Italians and took Toburuk on 7th January, 1941 and Benghazi on 7th Feb. Italians surrendered in next two days. One lakh soldiers were taken as Prisoners of War. British forces defeated Italians in Somalia by November 1941.

Hitler sent Gen. Romell to Libya to support Italian army with two divisions. Romell was a genius in tank warfare. He started his onslaught on March 24 and started over running the British forces along the coast and recapture Toburuk on 17th April. There was no fight till November. England attacked Toburuk on 18th November. Romell repulsed the attack. Now he was short of fuel and started retreating. By January 1942, he was back where he was the previous year i.e. El Aghela. Now Romell again attacked on 21st January and reached Gazala. Now there was a stalemate.

Fighting started again on 26ht May and Romell started making similar advances again. By 30th June, he reached El Alamein (150 km from Cairo). His soldiers were thoroughly exhausted. Still he continued the fighting but could not break the British defense. There was stalemate again. Gen. Montgomery was now the new Commander. England was able to block fresh supplies of oil to Romell by attacking German ships. Romell had to rely on captured depots. Montgomery attacked German formations on 23rd October. There was heavy fighting but luck was not on Romell's side. Shortage of fuel made him to retreat back to square one. The victory of El Alamein proved a turning point. In the meantime, American forces landed in Algeria in large number. Additional German forces were sent in Tunisia in January 1943. There was a heavy fighting on March 6 but repulsed. Romell left for Germany on sick leave and that was the end of German resistance in North Africa. Finally, on 7th May 1945, 2.4 lakh German soldiers surrendered to the Allies. It was a disaster for Axis comparable to the one at Stalingrad.

Attack on Russia

Hitler attacked Russia for two reasons. Firstly, he hated communism/bolshevism and secondly, he wanted rich agricultural land of Ukraine and oil fields in Caucasus and Egypt. Stalin was informed about the intentionsof Hitler to attack Russia but he dismissed this information point blank. So, Germany attacked Russia on 22nd June, 1941. It was the greatest operation on land in the history military operations along a frontier of 1600 kms. The army consisted of 3 million soldiers, 7.5 lakh horses, 3500 tanks and 5 lakh trucks. It was also a three-pronged attack. One formation proceeded towards Leningrad, another to Moscow and third towards Crimea and Rostov in south. It was called operation Barbarossa. Russian army was in total disarray because of the purge conducted by Stalin. But Stalin had one big trump card in Marshall Zhukov and had placed complete faith in him for conducting the war unlike Hitler who meddled with the planning of his Generals

every day. Zhukov was an undaunted genius, master, strategist and careful planner of very high degree. This uncalled-for intervention of Hitler cost Germany many victories. One silly mistake of Hitler was that he did not visualize the impact of Soviet winter in his planning and arrangement of food and other logistics once the forces advanced beyond 200 kms line. Luftwaffe on the very first day destroyed 528 Soviet aircrafts on the ground and 210 in the air. The first group reached Leningrad (500kms from Germany) within 3months and laid the siege around the city and cutoff all the supply lines. The city was also subjected to continuous bombings by air and pounding by German artillery. The siege continued for 900 days and one million people died due to starvation and diseases.

Central column could proceed 650 kms by end of July and only 325 kms away from Moscow. There was heavy rain causing the soil to become a sea of mud. After a halt of two months Guderian (another genius in tank warfare) opened the drive on Moscow. Soviet armies were cutoff consigning another 6 lakh red army soldiers to captivity. There was early snowfall in October and German army was not prepared for harsh winter of Russia. There was severe problem of food. Soldiers survived by stripping the clothes of dead Soviet soldiers. But still German forces continued to advance and were only 32 kms away from Moscow on 27th November. Now Zhukov had assembled large army formations (brought from Siberia) with tanks and other warfare equipments. Soviet army gave a crushing counter blow and German army withdrew for the first time back by 200 kms. The third group advanced very fast and reached the farthest end at Sevastopol a distance of 900 kms. German losses so far were 7.43 lakh killed, 1.5 lakh trucks damaged and 3.0 lakh in need of repairs. Soviet losses were 30 lakh killed and 35 lakh taken prisoners.

There was stalemate till Feb, 1942. German army could reassemble and started resisting the Red Army well. By the summer, Germans started advancing again. They forgot about Moscow and started proceeding towards Stalingrad. In September, German army under Gen. Paulus entered Stalingrad. There was heavy street fight. By November 12, Stalingrad was under complete control of Germany up to river Volga. Intense bombing destroyed all the buildings. Hitler again forgot the impact of Russian winter. Zhukov was busy in encircling the German army over an arc of 160 kms. By Feb, German Sixth Army under Paulus was completely encircled and cut-off. There was no food. The soldiers had to eat the rats. Finally, 1 lakh German army surrendered on 31st March, 1943. The soldiers and officers were asked to march towards concentration camps. Only 5000 could reach the final post. Rest died in the way due to frost bite.

In the south, oil field of Caucasus were taken. As the summer season arrived hopes for German advance were revived. So, Hitler made a big onslaught on Russian army on July 4 at Kursk. German army consisted of 9 lakh soldiers while Soviet army had 13 lakh. The attack was immediately repulsed and within two weeks German army came backs to its original line. Now Russian army started having an overrun and started defeating Germans at every post. Kiev was taken in November 1943. Leningrad was liberated on 27th Jan, 1944. Finally Red Army entered Poland in July 1944. Russia now attacked Romania which surrendered on 30th August. Red Army then attacked Hungry. Hungry was defiant for 6 months and surrendered in Feb, 1945. Now Red Army made its move towards Berlin from river Vistula in Poland and reached Berlin on April 25, 1945. Stalin pressed his Generals hard to reach Berlin before the Allied forces from the other end. Hitler committed suicide on 29th April. Russian flag was hoisted on German Parliament building. Germany surrendered on 8th May to Allied forces unconditionally. This day was celebrated as the Victory Day.

(To be Continued)….

निःस्वार्थ कर्म का मर्म

"यदि कोई व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से कर्म करे, तो वह न केवल स्वयं पर विजय प्राप्त कर सकता है, बल्कि अपने अंतर्ज्ञान से संपूर्ण जगत को रोशन भी कर सकता है।" – स्वामी विवेकानंद का चिंतन...

उपार्जन करने से ही व्यक्ति को किसी भी वस्तु की प्राप्ति होती है। संभव है कि हम इस बात को न मानें, लेकिन आगे चलकर हमें इसका दृढ़ विश्वास हो जाता है। एक मनुष्य चाहे तो जीवन भर धनी होने के लिए एड़ी–चोटी का पसीना बहा सकता है। वह कई मनुष्यों को धोखा देने की कोशिश भी कर सकता है। लेकिन अंत में वह यही पाता है कि वह संपत्तिशाली होने का अधिकारी नहीं है। तब उसके लिए जीवन दुखमय और दूभर हो उठता है। हम अपने भौतिक सुखों के लिए भिन्न–भिन्न चीजों को भले ही इकट्ठा करते जाएं, लेकिन वास्तव में जिसका उपार्जन हम अपने कर्मों द्वारा करते हैं, वही हमारा होता है। दूसरी ओर अपनी वर्तमान अवस्था के लिए व्यक्ति खुद जिम्मेदार होता है। व्यक्ति जो कुछ होना चाहता है, उसकी शक्ति उसके अंदर होती है। यदि हमारी वर्तमान अवस्था हमारे ही पूर्वकर्मों का फल है, तो यह निश्चित है कि जो कुछ हम भविष्य में होना चाहते हैं, वह हमारे वर्तमान कार्यों द्वारा ही निर्धारित किया जा सकता है।

अतएव हमारे लिए यह जान लेना आवश्यक है कि किस प्रकार के कर्म किए जाएं। संसार में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी प्रकारसे तो काम करता ही रहता है। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम अपनी शक्तियों का कभी–कभार निरर्थक क्षय भी करते हैं। गीता के अनुसार, 'कर्मयोग का अर्थ हैं – कुशलता से अर्थात वैज्ञानिक प्रणाली से कर्म करना।' समस्त कर्मों का उद्देश्य है मन के भीतर पहले से ही स्थित शक्ति को प्रकट कर देना। आत्मा

को जाग्रत कर देना। प्रत्येक मनुष्य के भीतर पूर्ण शक्ति और पूर्ण ज्ञान विद्यमान है। भिन्न–भिन्न कर्म इन महान शक्तियों को जाग्रत करने तथा बाहर प्रकट कर देने में साधन मात्र मानते हैं। अपनी–अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य नाना प्रकार के कार्य करता है। कुछ लोग यश चाहते हैं, तो कुछ पैसा चाहते हैं। कुछ लोग अधिकार प्राप्त करना चाहतें, तो कुछ अपने बाद अपना नाम छोड़ जाने के लिए यत्न करते रहते हैं। कुछ लोग प्रायश्चित करने के लिए कर्म करते हैं अर्थात जीवन भर अनेक प्रकार के बुरे कर्म कर चुकाने के बाद एक मन्दिर बनवा देते हैं अथवा पुरोहितों को कुछ धन दे देते हैं। प्रत्येक देश में कुछ ऐसे भी स्त्री–पुरूष होते हैं, जो केवल कर्म के लिए ही कर्म करते हैं। वे नाम यश अथवा स्वर्ग की भी परवाह नहीं करते हैं। वे केवल इसलिए कर्म करते हैं कि उनके कर्म से दूसरों की भलाई होती हैं।

कुछ लोग उच्चतर लेकर गरीबों की भलाई करते हैं तथा मानव जाति की सहायता करते हैं। वे लोगों की भलाई में विश्वास करते हैं और उनसे प्रेम भी दर्शाते हैं। अक्सर नाम तथा यश के लिए किया गया कार्य शीघ्र फलित नहीं होता है। यदि कोई इंसान निःस्वार्थ भाव से काम करे, तो क्या उसे फलप्राप्ति नहीं हो सकती है? असल में तभी तो फल प्राप्ति होती है। सच पूछा जाए, तो निःस्वार्थता अधिक फलदायी होती है, पर लोगों में इसका अभ्यास करने का धैर्य नहीं होता है। प्रेम, सत्य तथा निःस्वार्थता अधिक फलदायी होती है, पर लोगों में इसका अभ्यास करने का धैर्य नहीं होता है। प्रेम, सत्य तथा निःस्वार्थता सिर्फ आलंकारिक वर्णन मात्र नहीं है। वे तो हमारे सच्चे आदर्श हैं। वे शक्ति की महान अभिव्यक्ति है। यदि मनुष्य पांच मिनट भी निःस्वार्थ भाव से काम कर सके, तो वह एक महापुरूष बन सकता है। यह शक्ति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। इसके लिए प्रबल संयम की जरूरत पड़ती है। सभी बुर्हिमुखी कर्मों की अपेक्षा इस आत्मसंयम में बहुत अधिक शक्ति खर्च होती है। मन की सारी बहिर्मुखी गति किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य की ओर दौड़ती रहने से छिन्न–भिन्न होकर बिखर जाती है।

यदि व्यक्ति संयमित होना सीख ले, तो इससे शक्ति की वृद्धि हो सकती है। इस आत्मसंयम से एक महान इच्छाशक्ति का प्रादुर्भाव हो सकता है। इससे एक ऐसे चरित्र का निर्माण हो सकता है, जो संपूर्ण जगत को अपने ज्ञान से रोशन कर सकता है। जिस प्रकार कुछ पशु अपने से दो–चार कदम आगे कुछ नहीं देख सकते, इसी प्रकार हम में से ज्यादातर लोग भविष्य के बारे में नितांत अदूरदर्शी होते हैं। हम सभी में दूरदर्शिता के लिए धैर्य नहीं रहता और इसलिए हम नकारात्मक कार्य करने लगते है। यह हमारी कमजोरी है। शक्तिहीनता है। अत्यन्त सामान्य कर्मों को भी हमें कभी घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को उच्चतर ध्येय की ओर बढ़ने तथा उन्हें समझने का प्रबल यत्न करते रहना चाहिए। हमें कर्म करने का अधिकार है। कर्म फल पर हमारा कोई अधिकार नहीं होता है। यदि आप किसी मनुष्य को उच्चतर ध्येय की ओर बढ़ने तथा उन्हें समझने का प्रबल यत्न करते रहना चाहिए। हमें कर्म करने का अधिकार है। कर्म फल पर हमारा कोई अधिकार नहीं होता है। यदि आप किसी मनुष्य की सराहना करना चाहते हैं, तो इस बात की कभी चिंता मत करें कि उस आदमी का व्यवहार आपके प्रति कैसा रहता है। यह भी मत सोंचे कि उसका फल क्या होगा?

हमें सदैव कर्म करते रहना चाहिए। आदर्श पुरूष तो वे हैं, तो परम शांति व निस्तब्धता के बीच भी कर्म करते रहने तथा प्रबल कर्मशीलता के बीच भी मरूस्थल जैसी शांति का अनुभव करते हैं ऐसे व्यक्ति संयम का रहस्य जान कर अपने ऊपर विजय प्राप्त कर चुके होते हैं। कोई भी व्यक्ति यदि पूर्ण रूप से निःस्वार्थ होकर कर्म करने लग जाए, तो वह स्वयं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

गोत्र एवं पंचायती परम्परा का विश्लेषण

– डॉ. धर्मचन्द्र विधालंकार

अभी–अभी एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई। पुस्तक का नाम है – 'पगड़ी, पंचायत और गोत्र' लेखक हैं – भाषाविज्ञानी और व्यंग्यकार डॉ. पूर्ण सिंह ड़बास। उन्होंने ग्रामीण–समाज के इन तीनों ही मान–बिन्दुओं की व्युत्पति व्याकरण के आधार पर निरूपित की है। इतना ही नहीं, सभी देशी और विदेशी भाषाओं में भी इन शब्दों के मूल का संघान किया है। यथा, पगड़ी शब्द का निर्वचन उन्होंने संस्कृत भाषा के पग शब्द से किया है जोकि पहले कभी पावों में पट्टियां बांधी जाया करती थी। बाद में पायजामें अथवा पतलून का आविष्कार होने पर ही पांवों की पट्टियां, शिरोभूषण के रूप में पाग या पगड़ी बन गई। उष्णीम जैसे शब्द इंडोयूरोपीय संस्कृत भाषा के ही हैं, लेकिन मुंडासा और खण्ड़वा जैसे समान शब्द हरियाणवी के द्रविड़ भाषाओं से सम्बन्धित हैं।

आलोच्य पुस्तक के लेखक का भाषिक और वैयाकरणिक अध्ययन अत्यन्त विस्तृत है। आपने हरियाणवी के खंडुआ का मूल तेलगू के कण्डूआ या कदंवा में तलाशा है तो कोलामी के खंडव (वस्त्र) और कदंवा (धोती) में ही देखा है। नायकी के खंड/खडंव (कपड़ा) से लेकर दर्जी के गंड से लेकर गरबा भाषा के गरंड (कपड़ा) तक की शब्द–यात्रा उन्होंने इस संदर्भ में की है।

उर्दू में पगड़ी को दस्तार कहते हैं तो पीढ़ी–परिवर्तन के पश्खत् परम्परागत चौधर या गद्दी के स्थानान्तरण को भी दस्तारबंदी ही कहा जाता है। जिस प्रकार दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए उसकी दस्तारबंदी विगत वर्ष कराई थी। इसी प्रकार से सउदी अरब के शेख की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र की दस्तारबंदी उनके स्थान पर की गई थी, जिसमें अमेरिका के राष्ट्रपति ने भी भाग लिया था। अतएव पगड़ी को लेकर इतने अधिक मुहावरे भी बन गये हैं। डॉ. पूर्णसिंह ने फारसी के दुलबन्द (मुकुट) को ही तुर्की का तुलबन्द

माना जाता है। उसी से इलालवी और फ्रैंच भाषाओं में वह टरबन या पगड़ी बन गया हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का दूसरा अध्याय पंचायत से सम्बन्धित है। इस शब्द का मूल यह लेखक वैदिक ग्रामणी या ग्राम्यवादिन से जोड़कर देखता है। लेकिन हमारे मतानुसार वह दस–बीस गांवों को राज्य प्रतिनिधी ही था जोकि मनोनीत था, निर्वाचित नहीं था। बल्कि इस शब्द की बजाय पंचजना अथवा पंचजन शब्द पंचायती परम्परा के मूल में अधिक हो सकता है। ईरानी धर्मग्रन्थ अवेस्ता में भी पंच शब्द का शाब्दिक अर्थ पांच की संख्या ही है, लेकिन यदि न्यायकर्त्ता व्यक्ति अकेला भी होता है तो भी उसे गांव में पंच कहा जाता है। सरकारी समझौतों में भी ऐसी संस्था को पंचाट ही बोला जाता है। पुराकाल में राजनीतिक अथवा शासकीय प्रशासनिक तन्त्र इतना विशाल और व्यापक नहीं था कि वह प्रत्येक व्यक्ति को सस्ता और सुलभ एवं निष्पक्ष न्याय दे सके। अतएव ग्रामीण समाज के लोगों ने अपने भाईचारें एवं शान्ति तथा सद्भाव को बनाये रखने पर वे अपनी व्यवस्था करते थे, तालाबों और कुओं का सामूहिक निर्माण करते थे, चौपालों का रख–रखाव भी किया करते थे। जमीन और ब्याह–शादियों के विवादों का निपटारा भी ग्रामीण जन पंचायती आधार पर ही किया करते थे। अतएव पंचायती व्यवस्था स्वयं में एक स्वायत्त स्वैच्छिक आधार पर सहकारी जन–व्यवस्था ही थी। सर्वखाप पंचायत का उसका देशव्यापी संगठन था, जिसका कार्यालय सौरभ जि0 मुजफर (उ0प्र0) में था।

डॉ0 पूर्णसिंह ने पंचायती परम्परा के संगठन की शुरूआत सम्राट हर्षवर्धन (सांतवीं) शताब्दी ईस्वी से ही मानी है। पंचायती संगठन के जन–बल का सहाय पाकर ही वह क्षेत्रीय क्षत्रप समग्र उत्तर–भारत का सम्राट बन गया था। भारत पर विदेशी आक्रमण होने के अवसर पर भी सर्वखाप पंचायत ने दिल्ली के सुल्तानों का सशस्त्र सहकार किया था। 1398 ई0 में तैमूर लंग के तूफानी आक्रमण का प्रखर प्रतिरोध पंचायती पहलवानों ने ही मेरठ से लेकर हरिद्वार तक किया था। तभी उसे भारत से बैरंग लौटाया जा सका था। उसी प्रकार से फिरोजशाह तुगलक और अलाउद्दीन तथा औरंगजेब जैसे अधिनायकवादी एवं अत्याचारी शासकों के भी विरूद्ध विद्रोह पंचायतों ने किया था। लेकिन अब्दाली के आक्रमण के विरूद्ध दिल्ली के सुल्तान और मराठों की सहायता भी की थी। इसी प्रकार चितौड़ के राणा संग्राम सिंह की सहायता सर्वखाप के योद्धाओं ने 1527 ई० में खानवा के युद्ध में हसन खाँ मेवाती के नेतृत्त्व में की थी। औरंगजेब के विरूद्ध जाटों एवं गुर्जरों तथा मेवों ने मिलकर ब्रजमण्डल में सुदीर्घ संघर्ष गोकुला जाट के नेतृत्त्व में किया था। अतएव समय–समय पर सर्वखाप पंचायतों के सेनापति भी भिन्न–भिन्न जातियों से नियुक्त किये जाते थे। तैमूरलंग के आक्रमण के समय सर्वखाप पंचायत की जनसेना का नायक योगराज गुर्जर था तो कभी देवपाल राणा था, कभी भीमदेव राठी था, कभी दुर्लनपाल अहीर था, कभी सागर सिंह रोड़ था और कभी धुल्ला अछूत जाति के सेनापति तक का नामोल्लेख सर्वखाप पंचायत के अभिलेखों में मिलता है। वैसे खाप शब्द की व्युत्पत्ति अज्ञात है परन्तु हम चाणक्य के कौटिल्य के अर्थशास्त्र में एक अक्षवाय संस्था का नाम पाते हैं जोकि ग्रामीणों के जुआ खेलने पर करभार लगाती थी। वर्तमान में भी पंचायतों की भूमिका दहेज–निवारण और समाज–सुधार के कार्यों में अग्रणी है जिसका उल्लेख लेखक ने किया है।

ग्रामीण सामाजिक संरचना और जातिय व्यवस्था का मूलाधार डॉ० पूर्णसिंह डबास गोत्रों की व्यवस्था को ही मानते हैं। वैसे भी हमें मध्यपूर्व काल से पहले जातीय व्यवस्था का कोई परिचय एक सामाजिक संगठन या इकाई के रूप में नहीं मिलता है। पाँचवी–छठी शताब्दियों से पूर्व जातियां केवल व्यवसायों की ही वाचक थी। क्योंकि तब तक भारतीय समाज में सामन्तवाद और साम्राज्यवाद की स्थापना न होने के पश्चात गणों की राजनीतिक शक्तियां छिन्न–भिन्न हो गई थी, अतएव उनकी केवल सामाजिक या पंचायती शक्तियां ही शेष रह गई थी। सुविख्यात इतिहासकार डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार का भी इस विषय में यही अभिमत है।

डॉ० पूर्णसिंह मूलतः भाषा–विज्ञान के विद्वान हैं, अतएव उन्होंने भाषिक आधार पर ही गण–गोत्रों की उत्पत्ति खोजी है। उनके मतानुसार गोत्र आरम्भ में गोष्ठ यो गोचारण का स्थान ही था। जिन लोगों की गायें एक स्थान पर बंधती थी, वहीं जनसमूह समगोत्रिय कहलाने लग गया था। दूसरा आधार गोत्र का रक्त–वंश की समानता का है, तीसरा आधार गोत्रों के नामकरण का ग्राम वाचक है। यथा, पंजाब में प्रताप सिंह कैरो व बादल और हरियाणा में चौटाला और सुरजेवाला जैसे ग्रामवाचक गोत्र ही हैं। चौथा आधार यह लेखक गोत्रों का उपाध्रियों को ही मानता है। यथा, मलिक (गठवाले) या रावत, सहरावत, ठाकरान आदि गोत्रं जोकि वंश और व्यवसायगत न होकर केवल उपाधिवाचक ही हैं।

डॉ० पूर्णसिंह डबास एक और आधार गोत्रों का व्यवसायगत भी मानते हैं जैसे कि लाला रामगोपाल शालवाले, दारूवाला, मशरूवाला आदि। एक और गोत्र का आधार उपाधि अथवा अंलकरण भी है। जैसे कि ब्राह्माणों में एकवेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी तथा चर्तुवेदी, उपाध्याय (ओझा) और पाठक तथा अग्निहोत्री आदि। इसी प्रकार से अवस्थी भी ऐसा ही गोत्र है जोकि अवसथ अथवा घज्ञस्थान पर निवास करते थे, उन कन्नौजिया ब्राह्माणों को ही यह उपाधि प्रदान की गई थी। शास्त्री और आचार्य भी ऐसे ही उपाधिवाचक उपकरण है जैसे कि लालबहादुर शास्त्री, नन्दकिशोर आचार्य आदि।

इस पुस्तक के लेखक गोत्रों के प्रचलनकर्ता मूलतः ब्राह्मणों ने ही सप्तऋषियों के नाम से ही आरंभ में सात गोत्रों का प्रचलन किया था। अत्रि, वशिष्ट, भारद्वाज, कश्यप तथा विश्वमित्र। बाद में आठवें मंडार्य (ईरानी) अगस्त ऋषि भी इनमें जोड़ दिये गये थे। सात–सात ऋषियों के उतने ही प्रवर बताये गये थे, इस प्रकार से कुल 49 प्रवर बताये गये हैं। ब्राह्मण–पुरोहितों ने अपने गोत्र अपने–अपने कुल के यजमानों अथवा ग्राहकों को दे रखे थे ताकि दूसरे कुल का पुरोहित उनके यहाँ पर यज्ञ–याग और संस्कार नहीं करा सके।

यहाँ पर संभवतः लेखक यह भूल गया है कि यदि ब्राह्मण अपने क्षत्रिय यजमानों के साथ अपना–अपना गोत्र जोड़ते थे तो वे भी अपने गोत्रों के साथ क्षत्रियों के शासन जोड़ते थे। जैसाकि मेरे अपने गांव (अल्लीका) के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण अपने गोत्र के साथ

हमारा शासन–कुडोटिया भी जोड़ते हैं। अतएव वे हमारे कुंडू जाटों के गांवों वाले भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों के साथ शादी–ब्याह नहीं करते। गोढोलियां जैसे भारद्वाजों में बेशक विवाह–सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। ब्राह्मण जातीय लोग भले ही सगोत्र विवाह रचाते हैं लेकिन क्षत्रियों के शासनों को वे भी बचाते ही हैं। इसी प्रकार से उनके क्षत्रिय या वैश्य यजमान उनके द्वारा प्रदत्त गोत्रों को बचाकर ही विवाह–सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इसके अतिरिक्त गांव (अपने) गांव से संलग्न सीवान के गैर गोत्रज लोगों के साथ भी पंचायती परम्परा में विवाह वर्जित हैं। क्योंकि सीमा–जोड़ गांव के लोग भी रक्त–सम्बन्धी जैसे ही समझे जाते हैं।

एक ही गोत्र के लोग लगभग प्रत्येक जाति में बिखरे दिखाई पड़ते हैं। जैसेकि चौहान, तंवर या तोमर पंवार, परमार और गुहलौत या गहलौत जैसे गोत्र हमें राजपूतों से लेकर हरिजनों तक में मिलते हैं हो सकता है कि ये गोत्र कभी गण या जन अथवा कबीले रहे हों, जिनमें रक्त–वंश की समानता थी। बाद में कालभेद और स्थान भेद से ही बिखरकर व्यवसायों में बंट गये हैं। सत्ता–सम्पन्न गण–गोत्र अथवा जातियां ही द्विजातियां बन गई हैं तो राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक (ब्राह्मण–श्रमण) संघर्ष में पराजित गण अथवा जातियां ही आजकल सामाजिक सोपान क्रम के निचले पायदान पर स्थित हैं। खान–पान और सांस्कृतिक प्रतिमान भी सामाजिक संस्तरण का निर्धारण करते हैं। तभी स्पृश्य और अस्पृश्य जातियां बनी हैं।

डॉ० पूर्ण सिंह डबास ने यह पुस्तक लिखकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन का यह प्रयास प्रशंसनीय है एवं पुस्तक पठनीय है।

मेक इन इण्डिया

– डॉ0 भूप सिंह, भिवानी

आज देश में प्रधानमंत्री मोदी जी के 'मेक इन इण्डिया' नारे की और इसे सार्थक करने के लिए विदेशी निवेश लाने की ताबड़–तोड़ विदेश यात्राएं प्रत्येक सतर पर चर्चा का विषय बना हुआ है। इस मेक इन इण्डियां के शोर–शराबे में मुझे रह–रहकर 1984 के ब्लू–स्टार आपरेशन की याद आती है।

जब प्रधानमंत्री इण्दिरा गांधी को अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर को काबू करने के लिए सेना द्वारा आक्रमण करवाना पड़ा था। ब्लू–स्टार आपरेशन के दो महिने बाद कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में एक सप्ताह का रिफरेशर कोर्स लगा था जिसमें सारे हरियाणा के लगभग सभी विषयों के प्राध्यापक भोजन के समय या रात को खाना खाने के बाद घूमते हुए इक्कठे होते ब्लू–स्टार आपरेशन की चर्चा होती।

चर्चा के सारांश के रूप में दो बातें ही सुनने को मिल रही थी। कुछ कहते थे ठीक हुआ, कुछ कहते थे गलत हुआ। मैंने अधिक से अधिक प्राध्यापकों से चर्चा की लेकिन मुझे एक भी चर्चा ऐसी नहीं मिली जिसमें यह विश्लेषण हो कि आपरेशन की नौबत क्यों आई।

यही हाल मेक इन इण्डिया का है। मुझे कहीं भी यह विचार पढ़ने, सुनने चर्चा करने में नहीं मिल रहा कि 'मेक इन इण्डिया' नहीं 'मेक बाई इंडियन' चाहिए। जैसे कारणों का निवारण जब तक नहीं होता तब तक परिणाम से पीछा नहीं छूटता। इसी प्रकार जब तक मेक बाई इंडियन नहीं करेंगे तब तक मेक इन इण्डिया से हमारा उद्धार नहीं हो सकता। कोई भी उद्योग धंधा लगता है तो हवा–पानी–जमीन और सस्ती श्रम शक्ति चाहिए। ये चार संसाधन इंडिया के और उद्योग धंधे का लाभ विदेशियों का। ऐसे मेक इन इण्डिया से बाहर वालों को क्या परहेज और हमारा क्या भला? आओ थोड़ा संक्षिप्त में इस पर विचार कर लें।

' बाहर जाने वाला पैसाः– 1 वर्तमान में 6000 से ज्यादा विदेशी कम्पनियों, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं ने अपना पैसा हमारे देश में लगा रखा है।

हिन्दुस्तान यूनिलीवर का वैश्विक कारोबार में भारतीय कारोबार 12 प्रतिशत है परन्तु वैश्विक मुनाफे में भारत के मुनाफे का हिस्सा 19 प्रतिशत हैं। इसकी मातृ कम्पनी इग्लैंड की यूनीलीवर कम्पनी के 51 प्रतिशत शेयर हैं, कम्पनी ने 1990 से 2012 तक लगभग 500 अरब रुपये इग्लैंड भेजा।
कम्पनी द्वारा की गई अण्डर वैट और ओवर प्राइजिंग को जोड़ा जाए तो मुनाफा और भी ज्यादा होगा।

' आई.टी.सीः– इण्डियन यूबैंकों कम्पनी में 65 प्रतिशत विदेशी शेयर धारक हैं वर्ष 2015 में मुनाफा 644 करोड़ रहा। कोका–कोला और पेप्सी–कोला दोनों अमेरिकन कम्पनी हैं। मुत का कच्चा माल व भू–जल लेकर 60 अरब का कारोबार कर रही है। सब खर्चा निकाल कर 30 अरब रुपये देश के बाहर जा रहा हैं।

' दवा कम्पनी बेयरः– जर्मन दवा कम्पनी गुर्दे व यकृत के कैंसर की दवा नेक्सावर एक महिने की खुराक के 284000 रुपये वसूल कर रही थी। भारतीय दवा कम्पनी नाटको फार्मा 8880 रुपये में और सिपला कम्पनी इसी दवा को 6840 में दे रही हैं दूसरी प्रमुख कम्पनियाँ बेंकर, सीबा, गाहमी, बेरोज, वेलकम, पार्के, डेविस, फाईजर, ग्लेक्सो आदि प्रमुख कम्पनियां हैं जो अरबों रुपयों का मुनाफा यहाँ कमा रही हैं। मोनसेटों जी.एम. बीजों की सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी, अमेरिकी कम्पनी है, जो 29 प्रतिशत वृद्धि कारोबार में कर रही हैं। बी.टी. काटन के बीजों का 400 ग्राम के पैकेट की कीमत 1750 रुपये किसानों से वसूली जा रही है। अन्य भारतीय कम्पनियों को अपनी तकनीक बेचकर रायल्टी के रूप में पैसा कमा रही हैं।

20 भारतीय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का लगभग 5 हजार अरब रुपये देश से बाहर लगा हुआ हैं। इनमें 70 प्रतिशत रुपये केवल पांच कम्पनियाँ टाटा, रिलायंस, हिंडालकों, इन्फोसिस और विप्रो के हैं। यदि सभी विदेश कम्पनियों का मुनाफा जोंड़े जो देश से बाहर जा रहा है, वह लगभग 600 अरब रुपये प्रतिवर्ष के करीब हैं।

' रायल्टी की लूटः– रायल्टी किसी अन्य की तकनीक को प्रयोग करने की फीस है।

दो बाते विदेशी निवेश के पक्ष में कही जाती हैं कि विदेशी पूंजी के साथ हमें तकनीक और ब्रांड मिलता है। बिजिनैस स्टैण्डर्ड के अनुसार 2012–13 में 71 बहुराष्ट्रीय कम्पनियों जिनके आंकड़े उपलब्ध हैं ने रायल्टी और तकनीक फीस के रूप में भारत में काम कर रही अपनी शाखाओं से 48.38 अरब रुपये वसूले जबकी उनकी कुल लाभांश आमदनी 45.29 अरब रुपये ही थी।

मारूती सुजुकी अपनी मातृ कम्पनी सुजुकी को कुल बिक्री का 5.5 प्रतिशत रायल्टी के रूप में चुकाती है। असाही इण्डिया ग्लास को 2011–2012 में 58.7 करोड़ रुपये का घाटा हुआ इसके बावजूद मातृ कम्पनी को 20.5 करोड़ रुपये कर रायल्टी चुकाई। अमेरिकी फास्ट फूड कम्पनी मैकडानल्ड कम्पनी कारपोरेशन अपनी भारतीय फ्रैंचाईजी को हार्डकैस्ल रस्टोरेंट से 2020 तक कुल बिक्री का 8 प्रतिशत रायल्टी लेगी।

विदेशी प्रायोजकों जिन्हें रायल्टी पानें के लिए सरकारी अनुमती लेना जरूरी था वे अब सरकारी नियन्त्रण से मुक्त हो गए और अपनी भारतीय शाखाओं से किसी भी मात्रा में रायल्टी ले सकते हैं। रायल्टी की लूट के पक्ष में तीन तर्क दिए जाते है। विशिष्ट सेवायें – जैसे–जैसे तकनीक का सुधार 2 अच्छा मैनेजमैंट 3 शेयर होल्डरज को लाभ। यदि इनों तीनों दृष्टियों से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को परखा जाए तों उपरोक्त में से एक बात भी धरातल पर लागू नहीं होती।

रायल्टी एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों अपनी स्थानीय शाखाओं के वास्तविक क्रिया–कलापों से रायल्टी के रूप में हो रहे देश के भंयकर निचोड़ को छूपा लेती हैं। हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का उनके श्रमिकों के साथ व्यवहार को देखें तो यह भी शोषणकारी स्पष्ट दिखाई देगा।

उदाहरण के लिए यदि मारूति के मानेसर प्लांट के श्रमिकों को वेतन यदि 10,000 रुपये प्रतिमाह भी बढ़ा दिया जाता है तो यह कुल बढ़ोतरी की रकम कुल आमदनी का मात्र 0.5 प्रतिशत होता । यह रकम 24 करोड़ रुपये बनती थी और उस साल रायल्टी का भुगतान 2500 करोड़ रुपये था। ऐसा न करने पर श्रमिकों और मैनेजमेंट का संघर्ष हुआ सैकड़ों श्रमिक गम्भीर आरोपों में 2 साल से जेल में बंद हैं। कुछ मुख्य कम्पनियों की कुल रायल्टी जोडी जाए तो सैंकड़ों अरब रुपये बनती हैं। मुनाफे के तौर पर 600 अरब रुपये और लगभग उतना ही रायल्टी के नाम पर मौजूदा बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ देश का धन बाहर कर रही हैं।

विकल्पः– 100 अरब रुपये के बदले 20,000 रुपये प्रतिमाह के हिसाब से 50 लाख लोगों को रोज़गार दिया जा सकता है। इस प्रकार जो रुपये रायल्टी व मुनाफे के रूप में बाहर जा रहा है उससे उधोगों में मिला रोज़गार सरकारी व निजी 11.12 लाख लोगों के करीब हैं

अब मोदी जी जो नया निवेश लेकर आएगें वह क्या पहले वाले के मुकाबले ज्यादा लोगों को रोज़गार देने वाला होगा? क्या अब आने वाला निवेश पहले के मुकाबले आसान शर्तों पर होगा? जो रोज़गार विदेशी निवेश देता है उससे कई गुणा रोजगार देश से बाहर जाने वाले पैसे से दिया जा सकता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि हम अपने देश के वैज्ञानिकों व इन्जिनियरों को प्रोत्साहन देते है तो तकनीक उधार लेने व रायल्टी देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

जब हमारे वैज्ञानिक व इन्जिनियर 104 राकेट एक साथ छोड़ सकते है तो क्या किसी उधोग में काम आने वाली तकनीक को विकसित नहीं कर सकते। शुरूआत हम छोटे व छोटे स्तर पर उधोग लगाकर कर सकते हैं।

अपने उधोगों को बढ़ावा देने के लिए हमें संरक्षण देना पड़ता है तो दें क्योंकि जितने विकसित देश हैं उन सभी ने शुरूआती दौर में अपने उधोगों को पूरा संरक्षण दिया था। इतिहास से सीख ना लेना मूर्खता ही है और इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मूर्खता कौन कर रहा है। मूर्खता का परिणाम हानि है। वह अवश्य भुगतनी पड़ेगी इससे बचने का भूमंडल पर कोई ईलाज नहीं है। किसी दबाब या छोटे स्वार्थ में कार्य करने की अपेक्षा उस दबाब से बाहर निकलने का प्रयास ही सच्ची देशभक्ति है। देशभक्ति कष्ट साध्य है, साहस का कार्य है, चुनौतियों का मुकाबला करना है। देशभक्ति भाषण व कागजी प्रोग्राम कतई नहीं है। विदेशी निवेश को बढ़ाकर देश को आर्थिक रूप से विदेशी पूंजी का गुलाम बनाना है देशभक्ति कतई नहीं।

धन्यवाद!

अनपढ़ जाट पढ़ा जैसा, पढ़ा जाट खुदा जैसा

यह धटना सन् 1270–1280 के बीच की है। दिल्ली में बादशाह बलबन का राज्य था। उसके दरबार में एक अमीर दरबारी था। जिसके तीन बेटे थे। उसके पास उन्नीस घौड़े भी थे। मरने से पहले वह वसीयत लिख गया था कि इन घोड़ों का आधा हिस्सा. ... बड़े बेटे को, चौथाई हिस्सा मंझले को और पांचवा हिस्सा सबसे छोटे बेटे को बांट दिया जाये। बेटे उन 19 घोड़ों को इस तरह बंटवारा कर ही नहीं पाये और बादशाह के दरबार में इस समस्या को सुलझाने के लिए अपील की।

बादशााह ने अपने दरबारियों से सलाह ली पर उनमें से कोई भी इसे हल नहीं कर सका। उस समय प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो बादशाह का दरबारी कवि था। उसने जाटों की भाषा को समझाने के लिए एक पुस्तक भी बादशाह के कहने पर लिखी थी जिसका नाम 'खलिक बारी' था।

खुसरो ने कहा कि मैंने जाटों के इलाके में खूब घूम कर देखा है और पंचायती फैसले भी सुने हैं और सर्वखाप पंचायत को कोई पंच ही इसको हल कर सकता है। नवाब के लोगों ने इन्कार किया कि यह फैसला तो हो ही नहीं सकता।

परन्तु कवि अमीर खुसरो के कहने पर बादशाह बलबन ने सर्वखाप पंचायत में अपने एक खास आदमी को चिट्ठी देकर गांव–अवार (जिला–भरतपुर) राजस्थान भेजा (इसी गांव में शुरू से सर्वखाप पंचायत का मुख्यालय चला आ रहा है और आज भी मौजूद है)।

चिट्ठी पाकर पंचायत ने प्रधान पंच चौधरी रामसहाय सूबेदार को दिल्ली भेजने को फैसला किया। चौधरी साहब अपने घोड़े पर सवार होकर बादशाह के दरबार में दिल्ली पहुंच गये और बादशाह ने अपने सारे दरबारी बाहर के मैदान में इकट्ठे कर लिये। वहीं पर 19 घोड़ों को भी लाईन में बंधवा दिया। चौधरी रामसहाय ने अपना परिचय देकर कहना शुरू किया – 'शायद इतना तो आपको पता ही होगा कि हमारे यहां राजा और प्रजा का सम्बन्ध बाप–बेटे का होता है और प्रजा की सम्पत्ति पर राजा का भी हक होता है। इस नाते मैं जो अपना घोड़ा साथ लाया हूं, उस पर भी राजा का हक बनता है। इसलिये मैं यह अपना घोड़ा आपको भेंट करता हूं और इन 19 घोड़ों के साथ मिला देना चाहता हूँ, इसके बाद मैं बंटवारे के बारे में अपना फैसला सुनाऊंगा। बादशाह बलबन ने इसकी इजाजत दे दी और चौधरी साहब ने अपना घोड़ा उन 19 घोंड़ों वाली कतार के आखिर में बांध दिया, इस तरह कुल बीस घोड़े हो गये। अब चौधरी ने उन घोड़ों का बंटवारा इस तरह कर दिया–

' आधा हिस्सा (20/2त्र10) यानि दस घोड़े उस अमीर के बड़े बेटे को दे दिये।

' चौथाई हिस्सा (20/4त्र5) यानि पांच घोड़े मझले बेटे को दे दिये।

' पांचवा हिस्सा (20/5त्र4) यानि चार घोड़े छोटे बेटे को दे दिये। इस प्रकार उन्नीस (10+5+4त्र19) घोड़ों का बंटवारा हो गया। बीसवां घोड़ा चौधरी रामसहाय का ही था जो बच गया।

बंटवारा करके चौधरी ने सबसे कहा – 'मेरा अपना घोड़ा तो बच ही गया है, इजाजत हो तो इसको मैं ले जाऊ ?'

बादशाह ने हां कह दी और चौधरी साहब का बहुत सम्मान और तारीफ की। चौधरी रामसहाय अपना घोड़ा लेकर अपने गांव सौरम की मरफ कूच करने ही वाले थे, तभी वहां पर मौजूद कई हजार दर्शक इस पंच के फैसले से गदगद होकर नाचने लगे और कवि अमीर खुसरों ने जोर से कहा–

'अनपढ़ जाट पढ़ा जैसा, पढ़ा जाट खुदा जैसा'

सारी भीड़ इसी पंक्ति को दोहराने लगी। तभी से यह कहावत हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तरप्रदेश तथा दूसरी जगहों पर फैल गई।

यहा यह बताना भी जरूरी है कि 19 घोड़ों के बंटवारे के समय विदेशी यात्री और इतिहासकार इब्नबतूता भी वहीं दिल्ली दरबार में मौजूद था। यह वृत्तांत सवंखाप पंचायत के अभिलेखागार में मौजूद है। धन्यवाद्

ये है जाटों का इतिहास दोस्तों।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB1988) 28/5'2" M.A. (Economics) Hons., Pursuing Ph.D . NET cleared. Employed as Assistant Professor in Chandigarh. Father retired Class-II officer from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana. Cont.: 09988224040
- SM4 Jat Girl (DOB 20.08.86)30.6/5'3" BAMS, MHA. Studying and coaching for IAS in Delhi.Father SDO retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Girl (DOB19.07.90) 26.7/5'4" M.A. Sanskrit, B.Ed. P.Phil from P.U. Chandigarh. Pursuing from P.U. Chandigarh. CTET, NET, HTET cleared. Avoid Gotras: Duhan, Kundu, Sehrawat. Cont.: 09416620245
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 26.6/5'4.5" MSc from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer in MNC Phase-I Chandigarh) Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 25/5'4" MSc Physics from P.U. Chandigarh. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 13.07.90) 26.6/5'9" M.A. Economics, B.Lib. Employed as Librarian. Avoid Gotras: Hooda, Malik, Khatri. Cont.: 09417529417
- SM4 Jat Girl (DOB 12.02.91) 25.11/5'3.5" B. Tech. from K.U.K. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 08591364586
- SM4 Jat Girl (DOB 12.08.92) 24.5/5'6" B.A, JBT. Avoid Gotras: Mor, Chahal, Rathee. Cont.: 09416688653, 09467772156
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 27.2/5'3" 10+2, GNM. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 23. 04. 91) 25.8/5'3" + Chartered Accountant Employed as Associate Consultant in Infoysis Company, I.T Park Chandigarh with Rs. 7 lakh P.A. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Mann, Hooda, Rathee. Cont.: 09815005193, 9888774788
- SM4 Jat Girl (DOB1991) 25/5'1" B.Com., MBA, Doing B.Ed. Father, Grandfather retired from Govt. job, Mother Lecturr in Govt. School. Rural/Urban property. Avoid Gotras: Malik, Lohan. Cont.: 09416850371, 09416203233
- SM4 Jat Girl 26/5'2" B.E. Working as Manager in Bank of India in Chandigarh. Father in I.A.F., Mother housewife. One brother. Avoid Gotras: Chauhan, Dhaka. Cont.: 07696566024
- SM4 Jat Girl (DOB 07.12.89) 27/5'6" B.D.S. Working in a reputed Private Dental Hospital. Avoid Gotras: Balyan, Mann. Cont.: 09466367107, 09467994607
- SM4 Jat Girl (DOB 26.07.88) 28.4/5'4" M.A. (Geography) B.Ed, M.Tech, (Geoinformatic). Employed as Project Assistant (Adhoc) in Science & Tech. Deptt. Panchkula. Father in Central Govt. job. Avoid Gotras: Dalal, Dahiya, Panwar. Cont.: 09416534644
- SM4 Jat Girl (DOB 19.02.89) 27.10/5'2" M.A. M.Phil, Pursuing Ph.D (Sociology) from P.U. Chandigarh, UGC, NET qualified Working as Lecturer in Post Graduate Govt. College for Girls, Sector 42, Chandigarh from last three years. Martch preferred Chandigarh, Panchkula, Mohali. Avoid Gotras: Narwal, Pannu, Ahlawat. Cont.: 09416862660, 09729577161
- SM4 Jat Girl (DOB Sep.1991) 25.2/5'4" M.A. Psychology from P.U. Chandigarh. HTET cleared. Employed as Assistant Professor on contract basis. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Mor. Cont.: 09876221778
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.83) 33.4/5'5" M.A. (Eng.). MBA, B.Ed.

Working in HR NOIDA. Grand Daughter of Sir Chhotu Ram. Avoid Gotras: Ohlian, Bajad, Dagar, (Ahlawat not direct). Cont.: 09896399003

- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90) 26/5'2" B.A. B.Ed. from Chandigarh. Father Govt. Officer in HSIDC. Avoid Gotras: Hooda, Kundu, Bhanwala. Cont.: 09729235545, E.mail: hooda1962@gmail.com
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.88) 28.11/5'3" M.Tech Employed as Guest Lecturer in Govt. Polytechnic College Nilokheri. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl (DOB 17.02.90) 26.10/5'3" M.Tech Employed as Programmer in Food & Supply Department Karnal. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl 25/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.84) 32.2/5'3" M.Com. Passed Computer Course. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.B.A. Employed in MNC at Mumbai with Rs. 4.50 lakh package P.A. Father, Mother in Govt. Job. Avoid Gotras: Mor, Nain, Gill. Cont.: 09872330397, 09915711451
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 28.4/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl 27.5/5'7" BA (Hons), M.A. (Eng.) M.Phil, B.Ed. NET quqlified. Employed as JBT Teacher in UT Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar. Cont.: 09467394303
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991, 07814609118
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE) Avoid Gotras: Panwar, Deswal, Ahlawat. Cont.: 08053825053, 09813262849
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Cleared SSC Exam. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl (DOB 05.12.86) 30/5'5" M.Sc. Geology Employed as Class-I Gazzeted Officer at G.S.I. Govt. of India at Dehradun. Fathr School Lecturer, Mother Housewife. Avoid Gotras: Kundu, Rathee, Malik. Cont.: 08950092430
- SM4 widow issue-less Jat Girl (DOB 02.10.80) 36.2/5'3" M.Sc., M.Phil, B.Ed., Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 08570032764
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai, Package Rs. 10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188, 09560022263, 09416504181
- SM4 Jat Boy 30/6' B.Tech. from P.E.C. Chandigarh. Employed in Jindal Steel Ltd. with Package Rs. 8.5 lakh P.A. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Dhariwal, Lather, Basati. Cont.: 09592383356
- SM4 Jat Boy 25/5'8" B.Tech from PEC Chandigarh Employed as Inspector in Custom & Central Excise (C.G.S.Bombay) Avoid Gotras: Poonia, Lohan, Rathee. Cont.: 08950492573
- SM4 Jat Boy (DOB 04.12.90) 26/6' B.Tech Employed in Pb. & Sind Bank as P.O. at Jalandhar. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Brar, Beniwal. Cont.: 09467037995, 09416048202
- SM4 Jat Boy (DOB 15.04.91) 25.8/5'9" M.A. Employed as Clerk in SBI Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Saroha. Cont.: 08813089176, 09138530000
- SM4 Jat Boy (DOB 23.08.89) 27.4/5'10" B.Tech. Employed as Service Engineer in Tata Motor Ltd. In Haryana. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM4 Jat Boy (DOB 25.11.87) 29./5'9" 10+2, Employed as Data Operator in UT Chandigarh on contract basis. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Kadian. Cont.: 09463457433
- SM4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 26.8/5'9" B.Tech. Employed as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father & Mother Gazzeted Officer in Haryana Govt. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha. Cont.: 09988701460
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B.A. LLB Practicising in District Court Panchkula. Avoid Gotras: Balyan, Nehra, Cont.: 09996844340
- SM4 Jat Boy 28/5'10 B.A. PGDCA from P.U. Chandigarh. Employed in Punjab Coop. Bank as Regular D.E.O Father in Haryana Govt., Own Flat at Panchkula. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bazar. Cont.: 09876875845
- Pratibha Man, 23.11.1989/5'2"/B.Sc. Biotechnology, M.Sc, Biotechnology, PHD Biotechnology, Chandigarh, Gold Medalist, Neet, Gate, DBT, H-TET, Gotra : Man, Malik, Bainiwal, Address: 466/22, Durga Colony, Near Old Jail Road, Rohtak, M.: 9068949430, 9811205415
- दिल्ली, दिसंबर 1990 / 5′ 2.5′′, बीएससी बीएड, एमएससी (मैथ) प्राईवेट टीचर, पिता एयरफोर्स, माता गृहिणी, दो छोटी बहनें, वरीयता–सरकारी / प्राईवेट नौकरी, गोत्र ढाका, डागर, जाखड़, 8400804158
- झज्जर, 22 / 5′5′′ बीई (डीसीई, डीयू), एसो. कंसलटैंट (12 लाख भारत, 6500 डॉलर यूएसए मासिक) भाई क्लास–2 ऑफिसर–नेवी, पिता किसान, माता गृहिणी, वरीयता – बीटेक / एमबीए / सरकारी नौकरी, गौत्र – गाजला, ठाकरान (दहिया, धनखड़ सीधा) 9671597070, 9671596633
- पानीपत, 27 / 5′8′′, एमए (अंग्रेजी) प्रीपेरिंग नेट, आई.बी. कॉलेज पानीपत में कार्यरत, पिता रिटा. माता गृहिणी, भाई सॉटवेयर इंजीनियर (एमएनसी), वरीयता– नौकरी / बिजनेस, गोत्र– दलाल, जाग्लान, गुलिया, 9896474774
- बहादुरगढ़, 26 / 5′2′′, एमए (ईको), एमएड, पिता सरकारी नौकरी, माता प्राईवेट टीचर, एक छोटा भाई–एक्साइज इंस्पेक्टर, वरीयता– सरकारी नौकरी, गोत्र– छिकारा, दलाल, जून, 9253166161, 9466279797

वधु चाहिए

- सोनीपत, 30 / 5′8′′, बीई (आईटी), सेल्स ऑफिसर एचडीएफसी बैंक सोनीपत (2 लाख वार्षिक), पिता सरकारी, केंद्र सरकार, माता गृहिणी, गोत्र– अंतिल, मलिक, अहलावत, 9350997898

- झज्जर/हरियाणा, 29/5'6'', बीए, 6 महीने से मर्चेंट नेवी (2.5 लाख वार्षिक), भाई क्लास–2 ऑफिसर (मर्चेंट नेवी), बहन इंजीनियर, पिता किसान, माता गृहिणी, वरीयता– कोई डिमांड नहीं, गोत्र– काजला, ठाकरान (दहिया, धनखड–सीधा नहीं), 9671597070, 9671596633
- बहादुरगढ़, 1988/6', बीए, सब–इंस्पेक्टर दिल्ली पुलिस, सीजीएल, एपीयरिंग, पिता दिल्ली पुलिस, माता गृहिणी, एक भाई कार्यरत, वरीयता– सरकारी नौकरी दिल्ली, गोत्र– दलाल, रावत, काजला, 9355163863
- फरीदाबाद, 29/5'4'', एमसीए (एमडीयू) मैनेजर–आईटी नोएडा (6 लाख वार्षिक) फरीदाबाद में अपना मकान व अन्य प्रॉपर्टी, एक भाई एक बहन शादीशुदा, वरीयता– एमसीए/कार्यरत/कद 5'2''+, सरोहा, पंघाल
- हरियाणा/दिल्ली, जनवरी 1989/5'8'', बीएससी चीफ ऑफिसर मर्चेंट नेवी – करीब 3 लाख मासिक, पिता एएसआई–दिल्ली पुलिस, माता शिक्षित गृहिणी, छोटा भाई एमबीए शिक्षारत, वरीयता – 5'4''/सुंदर/सुशील, गोत्र– फलस्वाल, खत्री, मलिक, 9810901872
- SM4 Jat boy, सितंबर 1989/5'11'', एमबीबीएस, जेआर डीडीयू हास्पिटल (90 हजार मासिक), माता–पिता व्यवसाय, भाई इंजीनियर, भाभी डाक्टर, दिल्ली में अपना हास्पिटल, वरीयता– एमबीबीएस/एमडी, गोत्र–मलिक, नांदल, सांगवान, 8527390668, 8527390670
- मई 1989/5'10'', बीटेक (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), एमबीए (मार्केटिंग), आफिसर–मर्चेंट नेवी, पिता चीफ इंजीनियर, माता गृहिणी, बहन अविवाहित, वरीयता– मासिक आय 1 लाख से ऊपर, गोत्र–राठी, मलिक, नारा, 9813045153
- सोनीपत/रेवाड़ी, अगस्त 1989/6'1'', बीटेक, एमएस (लोरिडा (यूएसए), कार्यरत FIAT CHRYSLER चेन्नई (10.25 लाख वार्षिक), पिता रिटा.–हरियाणा सरकार, माता सरकारी नौकरी, तीन भाई–दो कार्यरत, एक शिक्षारत, वरीयता–बीटेक/एमटेक/कार्यरत, गोत्र– दहिया, बांगड़, खटकड़, 9466795477
- फरीदाबाद, नवंबर 1988/5'9'', बीटेक (आईटी), कार्यरत एमएनसी गुड़गांव (7.5 लाख पैकेज), पिता मैनेजर, माता गृहिणी, बड़ी बहन शादीशुदा, वरीयता– समकक्ष/सुंदर/शिक्षित, गोत्र–राठी, मान, मलिक, 9818220018
- रोहतक/हरियाणा, अगस्त 1985/5'10'', बीए, 2 वर्षीय इलेक्ट्रीशियन कोर्स (आईटीआई), प्रधान–जन जागृति एज्यू. सोसाइटी (40 हजार मासिक), माता–पिता टीचर रिटा., बड़ा भाई विवाहित, वरीयता– सुंदर/सुशील/गृहिणी, गोत्र– हुड्डा, गुलिया, राणा, 9416879107, 9991086705
- रोहतक/यूएसए, 29/6', बीटेक–कम्प्यूटर इंजीनियर, कार्यरत यूएसए कंपनी–बोस्टन, 1+ लाख यूएस डालर वार्षिक, पिता रीयल एस्टेट एजेंट, माता एसो. प्रोफेसर–सरकारी यूनि., बहन विवाहित–यूएसए, वरीयता– कम्प्यू. इंजी./कार्यरत यूएसए, गोत्र– मान, कुहाड़, राठी 9996005044, 9996001986
- गुड़गांव/सोनीपत, फरवरी 1984/5'11'', बीएससी, पायलट कोर्स (यूएसए, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड), कैप्टेन–इंडिगो एयरलाइंस, 8 लाख मासिक, अपना मकान, पिता रिटा. हरियाणा रोडेव्ज, बहन टीचर दिल्ली (विवाहित), वरीयता– असि. प्रोफेसर/डाक्टर/कालेज लेक्चरर, गोत्र– मलिक, सांगवान, खत्री, 9466945722
- दिल्ली, 27/5'7'', बीसीए, कार्यरत प्राईवेट कंपनी गुड़गांव (4 वर्षों से, 40 हजार मासिक), इकलौता लड़का, दिल्ली व एनसीआर में अपनी प्रोपर्टी, रिहायस दिल्ली, वरीयता– स्नातक/कार्यरत/कोर्सकम्पलीट/दिल्ली/हरियाणा/राजस्थान, गोत्र– छिकारा, खत्री, दलाल, 9250665617
- बहादुरगढ़, जुलाई 1987/6'2'', बीएससी, स्क्वाड्रन लीडर (इंडियन एयरफोर्स), पायलट दिल्ली, माता रिटा. सरकारी विभाग, भाई–भाभी कार्यरत, बहन शादीशुदा, वरीयता– पीजी (साइंस, इंगलिश, मैथ) कद 5'6''/सुंदर, गोत्र– खत्री, दलाल, जटराणा, 8901452089
- बहादुरगढ़, 26/5'2'', एमए (ईको), एमएड, पिता सरकारी नौकरी, माता प्राईवेट टीचर, एक छोटा भाई–एक्साइज इंस्पेक्टर, गोत्र– सरकारी नौकरी, गोत्र– छिकारा, दलाल, जून, 9253166161, 9466279797
- रोहतक, 1988/5'8'', कान्वेंट शिक्षित, एमए, एमफिल (अंग्रेजी), बीएड, सीटेट, पीएचडी शिक्षारत, पिता पूर्व चेयरमैन–भूमि विकास बैंक, माता मुख्य अध्यापिका, भाई मेजर (आर्मी), वरीयता–प्रोफेसर/लेक्चरर/गजेटिड आफिसर, गोत्र–कादियान, सहरावत, नारा, 9416055814
- बहादुरगढ़, अक्टूबर 1989/5'3'', बीटेक, एमटेक, एमसीए शिक्षारत, स्थायी टीजीटी–केंद्रीय विद्यालय दिल्ली (6 लाख वार्षिक), पिता व भाई टीचर, माता गृहिणी, कृषि भूमि व प्लाट, संपन्न परिवार, वरीयता– टीचर/लेक्चरर/बैंक पीओ/समकक्ष, गोत्र– दलाल, पूनिया, गुलिया, 9466054810, 9466168678
- रोहतक, सितंबर 1988/5'1'', बीडीएस, एमडीएस (ईडो, फाईनल वर्ष), 8 लाख वार्षिक, पिता राजकीय सेवा में, माता गृहिणी, भाई व्यवसाय, वरीयता, डाक्टर/क्लास–1 आफिसर, गोत्र– खोखर, डॉगी, मलिक, 9416211908
- हरियाणा, अगस्त 1982/5'2'', एमफिल, बीएड, लेक्चरर–स्कूल कैडर, तलाकशुदा (एक लड़की – 6 वर्ष), गोत्र– दलाल, मलिक, दहिया 7206729852
- बहादुरगढ़/ 25/5'4'', मांगलिक, बीडीएस, लेक्चरर–बीडीएस कालेज, पिता व भाई का दिल्ली में अपना बिजनेस, गोत्र– ध ानखड़, राठी, दहिया, 9718317938
- हरियाणा/दिल्ली, 26/5'6'', बीटेक, सुंदर, एमएनसी कार्यरत (7. 5 लाख वार्षिक), पिता–एयरफोर्स, माता गृहिणी, भाई बीई शिक्षारत, गोत्र– मलिक, दहिया, 09972738152
- दिल्ली, जनवरी 1986/5'3'', बीए (डीयू), एमबीए, एमएनसी कार्यरत गुड़गांव, वरीयता– कार्यरत/शिक्षित, गोत्र– मलिक, दहिया, अहलावत, 9815099507, 8527257825
- हिसार, फरवरी 1987/5'3'', एमडीएस, पिता रिटा. सरकारी आफिसर, माता गृहिणी, बहन बीटेक–कार्यरत टीसीएस, गोत्र–चहल, ढांडा, राढ, 9911335474
- चरखी दादरी–हरियाणा, 34/5'7'', बीए, बीएड, एमफिल, पीएचडी (ईको), असि. प्रोफेसर (गेस्ट–यूनिवर्सिटी), पिता रिटा. आफिस सुपरिटेंडेंट (पब्लिक हेल्थ), माता रिटा. टीचर, वरीयता– समकक्ष शिक्षित/कार्यरत, गोत्र– सांगवान, श्योराण, ढोलिया, 8053066387
- हरियाणा, 1993/5'4'', बीटेक, साटवेयर इंजीनियर–विप्रो दिल्ली, गोरी, पिता रिटा. सरकारी अधिकारी, माता वाइस प्रिंसीपल, बहन–बहनोई एमडी डाक्टर, वरीयता– एमएनसी/सरकारी नौकरी/बैंकिंग, गोत्र– छिकारा, तोमर, दलाल, 9896250499
- हरियाणा, 28/5'5'', एमएससी (फुड टेक्नोलोजी) नेट पास, बीएड पास, पीएचडी शिक्षारत, एनडीआरआई–करनाल, माता–पिता, एक भाई, एक बहन, वरीयता– क्लास 1 व 2 आफिसर, गोत्र–सांगवान, जाखड़, अहलावत, 9416055527
- सोनीपत, अगस्त 1991/5'4'', बीएड–इंगलिष ऑनर्स, एमए, बीएड–डीयू, अंग्रेजी टीचर–जैन भारती पब्लिक स्कूल (3 लाख वार्षिक), माता–पिता, बहन, भाई, दादी, वरीयता–सरकारी नौकरी/बिजनेस/कार्यरत, गोत्र– खत्री, राणा, गुलिया, 9711135071

सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है। - पं. मोतीलाल नेहरू

- रोहतक, 27/5'2", बीएससी आनर्स (बायोटेक, गोल्ड मेडलिस्ट), एमएससी (बायोटेक), नेट, गेट, डीबीटी, एचटेट, पीएचडी– फाईनल ईयर, गोत्र– मान, मलिक, बेनीवाल, 9068949430, 9811205415
- पानीपत, 27/5'8", एमए (अंग्रेजी), प्रीपेरिंग नेट, आई.बी. कालेज पानीपत में कार्यरत, पिता रिटा. माता गृहिणी, भाई साटवेयर इंजीनियर (एमएनसी), वरीयता– नौकरी/बिजनेस, गोत्र– दलाल, जागलान, गुलिया, 9896474774
- सोनीपत, 24/5'4", एमएससी, कार्यरत–प्राईवेट स्कूल बहादुरगढ़ (2 लाख वार्षिक), पिता टीचर–प्राईवेट, माता गृहिणी, भाई कार्यरत–प्राईवेट कंपनी, वरीयता– पीआरओ/इंजीनियर/सरकारी नौकरी/कारपोरेट सेक्टर नौकरी, गोत्र– मलिक, अंतिल, खत्री, 8950407268

List of Donors of Jat Sabha Chandigarh

Sh. Subhash Deswal, President INLD, Safidon Distt. Jind (Hry.)	62000.00
Sh. M.S. Chaudhary, The Lagoon, NSW-2795-Australia	62000.00
Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.), # 222, Sector 36-A, Chd.	21000.00
M/s Bhushan Power & Steel Ltd., Indl. Areal Phase-I, Chd.	21000.00
Sh. Mohinder Singh, Pkl.	11000.00
M/s Nestle India Pvt. Ltd., SamalakhaDistt. Panipat (Hry.)	11000.00
Sh. Narender Kumar S/o Sh Ramdhari # 1242, Sect. 3, Rohtak (Hry.)	11000.00
Sh. Surender Singh Pannu, # 1471, Sector 20, Chd.	11000.00
Sh. Jai Pal Poonia, # 507, Sector 21, Pkl.	11000.00
Sh. Devender Chaudhary s/o Sh. Dhup Singh Grewal VPO: Rajli Distt. Hisar (Hry.)	11000.00
Sh. Rohtash Singh Nandal, President Tamil Nadu Jat Sabha, Chennai	11000.00
Sh. Rajbir Khatri, Vill: Chhilor-kalan, Distt. Rohtak (Hry.)	11000.00
Sh. Brijender Singh Lohan Ward No. 11, Narnound, Distt. Hisar. (Hry.)	11000.00
Mrs. Deval Devi Kadyan w/o Sh. Krishan Kadyan Founder President Jat Sabha Hyderabad	11000.00
Sh. Raj Kumar Malik, # 2822, Sector 21, Pkl. (Hry.)	5100.00
Sh Daryao Singh Malik, # 233, Sector 8, Karnal	5100.00
Sh. Chander Bhan Pannu, # 1973, Sector 15, Pkl.	5100.00
Subedar Balbir Singh, VPO: Gandhra, Distt. Rohtak	5100.00
Subedar Partap Singh, Village Kutrana, Distt. Jind (Hry.)	5100.00
Sh. Dharamvir Singh Narwal, President, Jat Maha Sabha Shamli (U.P.)	5100.00
Subedar Ramesh Kundu, # 254, Sector 27, Pkl.	5100.00
Sh. Wazir Singh, Supdt. H.G. Haryana # 1459, Sector 23, Chd.	5100.00
Ch. Kamal Singh, President, Jat Samaj Kalyan Parishad, Jammu	5100.00
Sh. Prem Singh Malik, IFS (Rtd.), # 464, Sector 2, Pkl.	5100.00
Col. Pirthi Singh, # L-173, AWHO, MDC, Sector 4, Pkl.	5100.00
Col. Rajesh Bhar, 104. E-11, GH-79, Sector 20, Pkl.	5100.00
Sh. Jagpal Singh s/o Sh Tara Chand Jorashi-khas, Samalkha (Panipat)	5000.00
Col. Nirbhai Singh, # 66, Sector 21, Pkl.	5000.00
Sh. Bhisham Singh Bishraw, President, Jat Sabha Nagpur	5000.00
Sh. Krishan Lather, C-62, GH-92, Sector 20, Pkl.	3100.00
Gram Panchayat Shamlo-kalan (Jind)	3100.00
Sh. H. S. Bhadu, # 75, Friends Colony, Hisar (Hry.)	3100.00
Sh. Laxman Singh Phogat, # 195, NAC Manimajra	2300.00
Sh. Har Narain Singh, DSP (Rtd.) VPO: Jasia, Distt. Rohtak (Hry.)	2100.00
Sh. Bharat Singh Gulia, C-304, GH-18, MDC, Sector 4, Pkl.	2100.00
Mrs. S. Deswal, Principal, Gyandeep Model School Sect. 20, Chd.	2100.00
Sh. Rajbir Sihag, Assistant Manager, Haryana State Coop. Bank Chd.	2100.00
Sh. B.S. Gill, #43, Sector-12A, Pkl	1100.00
Sh. Vijay Kumar Sangwan, # 587, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Jai Parkash Sheokand, 501, GH13, Sector 27, Pkl.	1100.00
Sh. Devender Singh Malik, # 839/11, Sector 4, Pkl.	1100.00
Sh. Attar Singh Pawar, # 969, Sector 26, Pkl.	1100.00
Sh. M. P. Dodwal, # 952, Sector 10, Pkl.	1100.00
Sh. Manbir Singh Sangwan, # 400, Sector 27, Pkl.	1100.00
Sh. Ramphal Nain, # 671, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Pritam Singh Sheokand, # 778, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Bhup Singh Pawar, # 949, Sector 7, Chd.	1100.00
Sh. Anand Singh, #1378, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Mahavir Singh, # 516, Sector 12-A, Pkl.	1100.00
Sh. Ishwar Singh Malik, # 2511, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Naresh Kumar Dahiya, # 1378, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Jai Singh Dudi, C-34, GH-92, Sector 20, Pkl.	1100.00
Sh. Jagbir Singh s/o Sh. Maha Singh VPO: Nirjan, Distt. Jind (Hry.)	1100.00
Sh. Mewa Singh Dhull, VPO: Harsola, Distt. Jind (Hry.)	1100.00
Sh. Raghubir Singh Ahlawat, Ratpur Colony, Pinjore (Pkl.)	1100.00
Sh. Sukhbir Singh Punia, # 1260, Sector 11, Pkl.	1100.00
Sh. Sukhbir Singh, Dy. Director Sports (Rtd.) Gurgaon	1100.00
Sh. Rishhpal Punia, VPO: Bichpari, Distt. Sonepat (Hry.)	1100.00

जाट सभा चंडीगढ द्वारा बसंत पंचमी समारोह आयोजित

जाट सभा चंडीगढ द्वारा 29 जनवरी 2017 आयोजित बंसत पंचमी एवं दीन बंधु सर छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह बडी धूमधाम से बनाया गया । समारोह के दौरान मुख्य अतिथि, केंद्रीय इस्पात मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह ने कहा कि सर छोटू राम जैसी महा विभूतियां कभी-कभी जन्म लेती हैं जो समाज को एक नई दिशा व सोच प्रदान करती है। सर छोटू राम ने समाज को कृषि का महत्व तथा किसान को उसकी दिक्कतों से निजात दिलवाने के प्रयास जीवन प्रयंत किए। उन्होने कहा कि इंसान की मूलभूत तीन वस्तुएं - कुली (मकान), गुली (रोटी) और जूली (बिस्तर) तीनों का उत्पादक किसान है फिर भी इसकी अनदेखी क्यों हो रही है। कृतज्ञ राष्ट्र उनका सदैव ऋणी रहेगा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती बंतो कटारिया धर्मपत्नी सांसद श्री रतनलाल कटारिया ने कहा कि सर छोटू राम किसी जाति विशेष के नेता ना होकर एक समाज सुधारक थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे जो खुद ही मुव्वकिल और किसान थे। उन्होने किसान-मजदूर के मर्म को पहचाना और इस वर्ग के कल्याण हेतू जीवनभर संघर्षरत रहे। दीन बंधु के सुझाए रास्ते पर चलने से ही ग्रामीण क्षेत्रों का विकास हो सकता है। वे अपनी वाक पटुता से दुश्मनों को भी अपना बना सकते थे। उन्होने कई मौकों पर यह कर भी दिखाया।

जाट सभा के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा0 एम0एस0 मलिक, आईपीएस (सेवा निवृत) डा0 महेंद्र सिंह मलिक ने कहा कि कृषि की मूलभूत जरूरत पानी है। इस दिशा में दीन बंधु सर छोटूराम ने भाखड़ा डैम की रूप रेखा तैयार की और इसमें आ रही बाधाओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किसान-मजदूर की दुर्दशा को सुधारने के लिए उन्होने कई बिल पारित करवाये। चौधरी छोटु राम का मानना था कि अंगूर का रस निकालने से ही महंगे स्वादिष्ट पेय बन सकते हैं। फूलों को मसलकर ही इत्र बनाया जा सकता है। कृषक मजदूर दोनों कसौटियों पर पूरा उतरता है। अन्नदाता खुद भुखा रहकर समाज की जरूरत पूरी करता है लेकिन सरकार को उसके मर्म का अहसास नहीं है। दीन बंधु के लिए जाति-पाति का कोई स्थान नहीं था बल्कि किसान मजदूर हर जाति धर्म का उनका प्रशंसक है। डा0 मलिक ने कहा कि भगवान को हम तीन रूप में देखते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो पैदा करने वाले, पालक तथा सहांरक की भूमिका निभाते हैं। किसान अन्न पैदा करने तथा सभी का पेट भरने की भूमिका निभाते हुए भी भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। सर छोटू राम किसान के इस मर्म से वाकिफथे और उन्होने सदा किसान की बैबूदगी हेतू कार्य किया। किसान के खेत हेतू पानी, बच्चे हेतू शिक्षा तथा ऋण मुक्ति के लिए सहकारी खेती जैसी प्रथा के लिए प्रयासरत रहे। उनकी तपस्या रंग लाई - लूट खसूट की प्रक्रिया का समापन हुआ। काणी डंडी, काणी बाट हटाने का श्रेय इन्ही को जाता है, जिसमें साहूकार किसानों का शोषण करते थे। उन्होने तकावी ऋणों से छुटकारे हेतू खेत के लिए पानी की व्यवस्था, बार-बार आते अकाल से निपटने हेतू पानी का भरोसेमंद स्त्रोत भाखड़ा डैम तथा उसकी पैरवी हेतू अनेकों कानून बनवाए। वे दुश्मन से भी प्यार से काम निकलवाने में निपुण थे। ऐसे किसान, मजदूर, मजलूम मसीहा की आज नितांत आवश्यकता है।

अपने ओजस्वी भाषण में डा0 मलिक ने प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई महत्वपूर्ण मुहिम 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला के समस्त सदस्यों की ओर से भरपूर स्वागत व समर्थन करते हुए कहा कि सरकार के इस सराहनीय प्रयास से आज की ज्वल्लंत समस्या - भ्रूण हत्या की रोकथाम व लगातार कम हो रहे कन्या अनुपात को बढ़ाने में जागरूकता उत्पन्न हुई है। सर छोटू राम ने अपने जीवन काल में ही स्त्री शिक्षा व कन्या बचाओ की वजाफ्त की थी जो कि आज प्रशासन के समक्ष एक चुनौती है। जाट सभा आरंभ से ही स्त्री शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या व नारी सशक्तिकरण आदि मुद्दों को कार्यक्रमों व विचार गोष्ठियों के माध्यम से उजागर करती रही है। उन्होने जाट सभा की तर्ज पर राष्ट्र की सभी जाट संस्थाओं व समाज सेवी संस्थाओं से भ्रूण हत्या को रोकने व स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा इस संदर्भ में शुरू किए गए महत्वपूर्ण अभियान को आगे बढ़ाने की अपील की। इस अवसर पर समाज के ज्वलंत विषय - समाज में पनप रही नशावृध्शि, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, आनर किलिंग आदि सामाजिक बुराईयों के साथ-साथ देश की सुरक्षा अखंडता व आन बान के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व युद्धवीरों के आश्रितों व परिवारों के लिए सरकारी सेवा में आरक्षण आदि प्रमुख मुद्दों पर भी विशेष तौर से विचार विमर्श किया गया।

जाट सभा ने इस अवसर पर खेलों तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन क्षेत्रों में उभरते हुए मेधावी छात्रों व अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों को स6मानित किया। रियो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता साक्षी मलिक, उसके माता-पिता तथा गीता व बबीता के पिता व कोच श्री महाबीर सिंह फोगाट को समारोह के दौरान विशेष तौर से स6मानित किया गया। सभा द्वारा हरियाणा के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर 4 जुलाई 2016 को आयोजित की गई अखिल भारतीय भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं तथा सभा द्वारा 23 नवंबर 2016 को 'बेचारा किसान' विषय पर आयोजित किए गए पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को भी प्रमाण पत्र व नकद पुरूषकार देकर स6मानित किया गया। सभा के महासचिव द्वारा वर्ष 2016 के दौरान जाट सभा द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों के साथ-साथ सभा द्वारा सैक्टर 6, पंचकुला में निर्माणाधीन सर छोटू राम भवन की प्रगति रिपार्ट भी पेश की गई।

समारोह के दौरान जाट सभा के वर्ष 2016 में सरकारी व अर्धसरकारी सेवाओं से सेवा निवृत होने वाले आजीवन सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। सभा द्वारा चलाई जा रही समस्त सामाजिक व अन्य कल्याणकारी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी सहित दीन बंधु सर छोटू राम की जीवन गाथा व सिद्धांतों पर आधारित स्मारिका व सभा की गतिविधियों/कार्यक्रमों के वार्षिक कलैंडर का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। समारोह के दौरान देश में कार्यरत विभिन्न सामाजिक व स्वंय सेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों को भी मुख्य अतिथि द्वारा स्मृति चिन्ह व शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान बहादुरगढ़ से राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनुभवी पेशेवर कलाकार - राजबाला एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न रागनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण रहे।

जाट सभा चंडीगढ द्वारा बसंत पंचमी समारोह आयोजित

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।